I J R S S I S, Vol. VIII, Issue (3), May-2022 : 216-220
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATIONwww.ijrssis.in

गरीबी और बेरोजगारी

प्रा. डॉ.फरहाना आझमी मो.सादीक शेख

उर्दू विभाग प्रमुख
मुंगसाजी महाराज महाविद्यालय, दारव्हा जि.यवतमाळ
Corresponding Author : dr.farhanaazmi@gmail.com

Communicated : 05.04.2022 | Revision : 08.04.2022 Accepted : 15.04.2022 | Published : 02.05.2022

सारांश :

गरीबी और बेरोजगारी एक ही सिक्के के दो पहेलु है। इसका अर्थ गरीबी और बेरोजगारी का बहुत ही निकट संबंध है। गरीबी के कारण बेरोजगारी बढती है तो बेरोजगारी के कारण गरीबी मे वृध्दी होती है। हमारा देष अनेक वर्शो से गरीबी और बेरोजगारी से संघर्श कर रहा है। आज भी गरीबी हमारे देष में एक बहुत बडी समस्या है। जिस के कारण हमारे देष के विकास में अडचण बनी हुई है। गरीबी के कारण हमारे छात्र अच्छी षिक्षा प्राप्त नही कर सकते षिक्षा के अभाव के कारण हमारे छात्रों को रोजगार प्राप्त नही होता है। भारत के आझादी से लेकर आज तक पिछले सत्तर वर्शो में भी हम अपने देष की गरीबी का निर्मुलन नही कर पाए। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने हमारे देष की गरीबी दुर करने के लिए गरीबी हटाओ का नारा दिया और पंचवार्शिक योजना में गरबी हटाने के लिए काफि प्रयास किया गया।

गरीबी की तरह बेरोजगारी भी हमारे देष की एक गंभीर समस्या है, आज हमारे देष मे षिक्षा का प्रचार, प्रसार बडे पैमाने पर हुआ है। इंजिनियरिंग और मेडीकल कॉलेज, उच्च षिक्षा संस्थान का विकास होने के कारण हमारे देष में सुषिक्षीत युवाओं की संख्या मे बहुत बडी वृध्दी हुई है। इन में हजारों युवक, युवतियॉ रोजगार से वंचित है। उच्च षिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिल नही पा रहे है। भारत एक खंडप्राय देष है, जिसका भौगोलिक विस्तार अधिक है और जनसंख्या भी बहुत अधिक है। हमारे देष की ८०: आबादी गॉव या देहातो में बसती है। इस ग्रामीण क्षेत्र में रहनेवाली जनसंख्या कृशी पर निर्भर है। इस क्षेत्र की जनता को रोजगार कृशी मे प्राप्त होता है या तो कृशी क्षेत्र से संबंधित छोटे–छोटे व्यवसाय तथा उद्योगो में प्राप्त होता है। इस निबंध मे हम गरीबी तथा बेरोजगारी पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

गरीबी / निर्धनता

गरीबी अथवा निर्धनता यह ऐसी समस्या है जिस में व्यक्ती अपने परीवार की मुलभूत जरुरतो की पूर्ती नही कर पाता। गरीबी के कारण व्यक्ती रोटी, कपडा और मकान इन मुलभूत जरुरतों को पुरा कर नही सकता। गरीबी के लिए शिक्षा का अभाव और रोजगार की कमी कों जिम्मेदार माना जाता है। भारत मे गरीबी की समस्या बहुत ही डरावनी होती जा रही है। गरीबी के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड रहा है। भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रो में बढती बेरोजगारी और उत्पादकता मे कमी के कारण गरीबी में वृध्दी हो रही है।

गरीबी के कारण

भारत में गरीबी मे हर दिन वृध्दी हो रही है। भारत में गरीबी के लिए जिम्मेदार कारणों का विवेचन हम निम्न निर्धारीत मुद्दो के आधार पर कर सकते है।

1. बढती जनसंख्या :–

भारत मे गरीबी का मुख्य कारण बढती जनसंख्या है। आज हमारे देश की जनसंख्या विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक है। पिछले कुछ वर्षो में सरकारद्वारा किए गए प्रयासों के चलते हमारे देश की जनसंख्या वृध्दी दर कुछ कम हुई है फिर भी बढती जनसंख्या का बोझ हमारी अर्थव्यवस्था पर पड सकता है। बढती जनसंख्या के कारण निरक्षरता, वित्तीय संसाधनो की कमी और स्वास्थ सुविधाओंका अभाव आदी समस्याएँ जन्म लेती है। एक अनुमान के अनुसार सन 2026 मे भारत की जनसंख्या 150 करोड हो सकती है और हम चीन को भी पिछे डाल कर विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन सकते है। भारत की जनसंख्या जिस गती से बढ रही है उस गती से हमारी अर्थव्यवस्था विकास नही हो पा रहा है। बढती जनसंख्या को सख्ती से रोकना और राष्ट्र के संसाधनों मे वृध्दी करके हम इस समस्या का हल कर सकते है।

2. अशिक्षा :–

शिक्षा के अभाव के कारण भी गरीबी में वृध्दी हुई है। इसलिए गरीबी के लिए अशिक्षा को भी जिम्मेदार माना जाता है। व्यक्ती की शिक्षा ही उसकी आर्थिक स्थिती तय करती है। अशिक्षीत व्यक्ती को अच्छा रोजगार नही मिल सकता ऐसे व्यक्ती को अत्यंत कम आय वाला ही रोजगार मिलता है। धन की कमी के कारण वह व्यक्ती अपने परीवार की मुलभूत आवश्यकताओं को पूरा नही कर

सकता। अच्छा रोजगार प्राप्त न करने के कारण वह और उसका परीवार गरीबी का शिकार बन जाता है।

3. छोटे–बडे उद्योगों की कमी :–

उद्योगों की कमी यही भी गरीबी का एक महत्वपूर्ण कारण है। हमारे देश में बडे उद्योग शहरों में लगाए गए है। वास्तविकता यह है की हमारे देश की 80% आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहती है। इन ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए इस क्षेत्र में उद्योग लगाना भी हमारी प्राथमिकता होनी चाहीए। ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या रोजगार के लिए शहरों में पलायन कर रही है, जिसके कारण हमारे शहरों पर जनसंख्या का बोझ बढ रहा है। जनसंख्या वृध्दी के कारण शहर के लोगों को बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड रहा है। पर्याप्त संसाधनो की कमी के कारण ग्रामीण क्षेत्र में रहनेवाले व्यक्ती अपने लघु एवं कुटीर उद्योग ठीक ठंग से चला नही पा रहे है। इन परिस्थिती के कारण ग्रामीण क्षेत्र में रहनेवाली बहुत बडी जनसंख्या गरीबी की समस्या से संघर्ष कर रही है।

4. कृषी की अधोगती :–

हमारी अर्थव्यवस्था कृषी पर आधारीत है। हमारे अर्थव्यवस्था के रीड की हड्डी कृषी ही है। हमारे अर्थव्यवस्था पर नैसर्गिक अथवा प्राकृतिक आपदा का प्रभाव पडता है। हमारे देश की 80% जनसंख्या के आय का प्रमुख स्त्रोत कृषी ही है। हमारे यहॉ पर कृषी प्रकृती पर निर्भर है। कभी बहुत ज्यादा बरसात के कारण फसल बर्बाद होती है तो कभी अकाल या ओले पडने के कारण खेती बर्बाद हो जाती है। इस परिस्थिती मे कृषी पर निर्भर किसान तथा मजदुर और कृषी आधारीत उद्योगोंमें काम करनेवाले लोगों पर बुरा प्रभाव पडता है। ग्रामीण क्षेत्र में काम करनेवाले लोगों की आय कम हो रही है, जिसके कारण गरीबी में वृध्दी हो रही है।

5. आर्थिक असमानता :–

भारत मे गरीबी के वुध्दी का कारण आर्थिक असमानता है। 1991 के आर्थिक सुधार के पश्चात हमारे देश मे आर्थिक असमानता मे वुध्दी हुई है। हमारे देश का गरीब अधिक गरीब हो रहा है और अमीर ज्यादा अमीर हो रहा है। गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ रही है। हमारे यहॉ गरीबी से गरीबी रेखा की ओर जाने वाले लोगों की संख्या बढ रही है।

6. बेरोजगारी :–

बढती हुई बेरोजगारी मी गरीबी का एक कारण है। पिछले कुछ वर्षो में हमारे देश की बेरोजगारी के दर मे वृध्दी हो रही है। सन 2021–22 मे बेरोजगारी के वृध्दी का दर सबसे ज्यादा है। कृषी क्षेत्र का पतन होने के कारण कृषी पर निर्भर सभी लोगों की आय में भारी गिरावट आई है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी में बहुत वृध्दी हुई है। शहरी क्षेत्र में भी उद्योगों मे मशिन का इस्तेमाल बढ गया है। काम्प्युटराएझेशन और डिजीटलायजेशन के कारण बॅक और अन्य क्षेत्रों में रोजगार की उपलब्धता कम हुई है। जिसके कारण हमारे देश में गरीबी मे वृध्दी हुई है।

7. कोविड 19 का प्रभाव :–

सन 2020 से सारे विष्व मे कोविड – 19 के महामारी प्रसार हुआ। कोविड के कारण विष्व के सभी देशों में लॉकडाऊन लगा दिया गया। जिसके कारण उद्योग बंद हो गए, बस, रेल्वे, हवाई यातायात बंद कर दिए गए। सभी प्रकारके व्यापार बंद पड गए जिसके कारण लाखो लोग बेरोजगार हो गए। बेरोजगारी के कारण लोगों की आय कम हो गई, जिसके कारण वह अपनी रोटी, कपडा और मकान जैसी मुलभूत आवश्यकता भी पूरा नही कर पा रहे है। सारे विश्व पर कोविड – 19 का बहुत बुरा प्रभाव पडा और हमारे देश में भी गरीबी मे वृध्दी हुई।

गरीबी रेखा (Poverty Line)

गरीबी रेखा वह रेखा है जो उस क्रय शक्ती को प्रकट करती है जिसके द्वारा लोग अपनी रोटी, कपडा और मकान इन मुलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते है। क्रयशक्ती को प्रति व्यक्ती औसत मासीक व्यवय (Per-Capital Average Monthly Expenditure) के रुप मे व्यक्त किया जाता है। भारत में गरीबी रेखा का निर्धारण करते समय जिवन निर्वाह के लिए खाद्य आवश्यकता कपडो, जूतो, इंधन और प्रकाश, शैक्षिक एंव चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं आदि पर विचार किया जाता है। गरीबी रेखा का आकलन करते समय खाद्य आवश्यकता के लिए वर्तमान सूत्र वांछित कॅलरी आवश्यकताओं पर आधारीत है। भारत मे स्विकृत कॅलरी ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कॅलरी प्रति व्यक्ती प्रतिदिन एवं शहरी क्षेत्रों के लिए 2100 कॅलरी प्रति व्यक्ती प्रति दिन है। भारत मे वर्ष 2000 मे किसी भी व्यक्ती के लिए गरीबी रेखा का निर्धारण ग्रामीण क्षेत्रों में रु. 454 प्रतिमाह किया गया था।

सारे विश्व में गरीबी बढ रही है। भारत की आादी के बाद से ही गरीबी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। योजना आयोग के अनुसार 1994–95 मे देष की 39.06 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा से निचे थी।

गरीबी दूर करने के उपाय

1. आर्थिक विकास की निती मे बदलाव आवश्यकताः–

भारत मे आर्थिक विकास का लाभ बडे उद्योगपतियों को और बडे किसानो को मिल रहा है। भारत मे बडे–बडे उद्योगो का निर्माण बडे शहरों मे किया जा रहा है। जिसके चलते ग्रामीण क्षेत्र के छोटे उद्योग बंद हो रहे है। इसलिए सरकारद्वारा ऐसी आर्थिक निती का स्विकार किया जाना चाहीए जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र के छोटे उद्योगो के विकास हो सके। ग्रामीण क्षेत्र मे कृषी पर आधारीत उद्योगो के विकास पर ध्यान देना चाहीए। ग्रामीण क्षेत्र मे उद्योगों का विकास हुआ तो ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार बडी संख्या मे उपलब्ध होगा और ग्रामीण क्षेत्र की गरीबी कम होगी।

2. कृषी विकास को बढावा :–

हमारा देश कृषी प्रधान देष है। हमारे देश की 80% जनसंख्या कृषी पर आधारीत है। हमारी अर्थव्यवस्था कृषी प्रधान है, लेकीन पिछले कुछ वर्षो से हमारे कृषी क्षेत्र की अधोगती हुई है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण हमारे कृषी आय मे भारी गिरावट आई है। जिसके कारण किसानो की आय कम हुई है। सरकार को कृषी क्षेत्र के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। किसानो को सिचांई की सुविधा उपलब्ध कराना चाहिए। छोटे किसानो को बहुफसली कार्यक्रम व्यावसायीक आधार पर कृषी करना, उन्नत सिंचाई और बीज आदी उपलब्ध कराना चाहिए। कृषी का विकास होगा तो किसानो की आय में भी वृध्दी होगी।

3. जनसंख्या नियंत्रण :–

भारत मे गरीबी का मुख्य कारण अनयिंत्रित जनसंख्या है। हमारे देश की जनसंख्या बढती जा रही है। जनसंख्या को नियंत्रित करके ही गरीबी से छुटकारा पाया जा सकता है। सामान्यतः गरीबीका कारण परीवार में जन्म दर का अधिक होना है। परीवार मे सदस्यों की संख्या अधिक होगी तो वह परीवार अपनी आवश्यकताओं की आपूर्ती नही कर सकता। इसलिए गरीबी कम करने के लिए हमे अपनी बढती हुई जनसंख्या को नियंत्रित करना अनिवार्य है।

4. <u>गरीबी निर्मुलन के लिए सरकार की योजनाएँ</u> :–

भारत मे गरीबी दूर करने के लिए केंद्र सरकारद्वारा अनेक योजनाएँ षुरु की गई है। इन योजनाओं के कारण गरीबी कम होने मे मदद हुई है।

- राष्ट्रीय ग्रामीण आजिविका मिशन (NRLM)
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 (MNREGA)
- प्रधानमंत्री आवास योजना – ग्रामीण (PMAY – G)
- प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY)
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)
- जल जीवन मिशन (JJM)
- स्वच्छ भारत मिशन (SBM)
- प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य)
- प्रधानमंत्री उज्वला योजना (PMUY)

बेरोजगारी (Un-Employment)

हमारे देश के समक्ष जो अनेक समस्याएँ है उन में बेरोजगारी यह एक गंभीर समस्या है। भारत के आझादी के बाद से बेरोजगारी दुर करने के उपाय हमारे सरकारद्वारा किये जा रहे है, लेकीन हमारे देश की यह समस्या आज विकराल रुप धारण कर चूकी है। वर्श 2021 मे भारत मे बेरोजगारी के वृध्दी का दर सबसे अधिक रहा है। किसीभी देश की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए बेरोजगारी पर मात करना अनिवार्य होता है।

अर्थ : ''जब व्यक्ती रोजगार के लिए उत्सुक हो पर उन्हे रोजगार प्राप्त करने का
कोई साधन न मिले असे हम बेरोजगारी कहते है।''

<u>बेरोजगारी के कारण</u>

हमारे देश में बेरोजगारी के कई कारण है जिसमे प्रमुख रुप से निम्न है।

1. धिमा आर्थिक विकास :–

भारत मे बेरोजगारी का मुख्य कारा आर्थिक विकास की धिमी गती है। किसी भी अर्थव्यवस्था मे रोजगार की उपलब्धता आर्थिक विकास की गती पर निर्भर होती है। हमारे देश की आर्थिक वृध्दी का दर अपेक्षाकृत नही है, इसलिए हमारे यहॉ रोजगार की उपलब्धता कम है। पिछले दो वर्षो से कोविड–19 का हमारी अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पडा है, जिसके कारण हमारे देश के आर्थिक विकास की गती भी अपेक्षा से कम रही। आर्थिक विकास की गती कम होने के कारण हमारे देशमें बेरोजगारी चरम सिमा पर पहुच गई है।

2. जनसंख्या मे वृध्दी :–

हमारे देश की जनसंख्या बडी तेजी से वृध्दी हो रही है। जनसंख्या के वृध्दी का बोझ हमारी अर्थव्यवस्था पर पड रहा है। हमारे देश की जनसंख्या 2.5% वार्शिक वृध्दी दर से बढ रही है। बढती जनसंख्या के कारण हमारे संसाधनो पर दबाव पड रहा है। अधिक जनसंख्या होने के कारण देश के सभी नागरीको को रोजगार देना हमारे सरकार के बस की बात नही है।

3. मशिनीकरण :–

उद्योग जगत में आज हमारे यहॉ मशिन का या यंत्रो का उपयोग किया जाता है। हर क्षेत्र में मशिनीकरण हो जाने के हारण रोजगार मे कटौती की गई। अनेक कारखानों में

यंत्रो का और मशिन का उपयोग किया जाने लगा जिसके कारण वहॉ काम करने वाले मजदूर बेरोजगार हो गऍ। मजदूरों की जगह मशिन ने ले ली। जो काम मजदूर हाथों से करते थे वह काम आज मशिन से होने लगा है। मशिनीकरण के कारण आज मजदूरों की जरुरत सिमित ही है, इस के कारण बेरोजगारी मे वृध्दी हो रही है।

4. सदोश शिक्षा प्रणाली :–

हमारे देश मे प्रचलित दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली बेरोजगारी को बढावा देती है। हमारे यहॉ अंग्रेजोद्वारा शुरु की गई शिक्षा प्रणाली का स्विकार स्वाधिनता के बाद भी किया गया। यह शिक्षा प्रणाली बेरोजगारी को बढाती है। इस शिक्षा प्रणाली मे तकनिकी शिक्षा पर विशेष ध्यान नही दिया गया है। औद्योगिकीकरण के बाद तकनिकी और व्यावसायीक शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य होती है। गत कुछ वर्षो से हमारी सरकार तकनिकी और व्यावसायीक शिक्षा के उपर ध्यान दे रही है। इसका भविष्य मे अच्छा प्रभाव दिखेगा।

5. कुटिर और लघु उद्योग का पतन :–

भारत मे प्राचीन काल से कुटिर और लघु उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। लेकिन अंग्रेजो के आगमन के बाद इन छोटे–छोटे उद्योगों का पतन हो गया। ग्रामीण क्षेत्र में इन छोटे उद्योगों मे लोगों को रोजगार प्राप्त होता था। औद्योगिकीकरण का सबसे बुरा प्रभाव इन छोटे उद्योगों पर पडा और इनमें काम करनेवाले श्रमीक और कारागीर बेरोजगार हो गए। ग्रामीण क्षेत्र के इन उद्योगों के पतन के बाद ग्रामीण क्षेत्र कें लोग रोजगार के लिए षहरो की ओर पलायन करने लगे।

6. कृषी का पतन:–

कृषी हमारे देश का प्रमुख व्यवसाय है। हमारी अर्थव्यवस्था कृषी प्रधान है कारण हमारी अर्थव्यवस्था कृषी पर निर्भर है। कृषी के साथ कृषी पर आधारीत अनेक उद्योग हमारे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बनाते है। लेकीन पिछले कुछ वर्शो से कृषी का पतन हुआ है।

प्राकृतिक आपदाओं के कारण कृषी क्षेत्र मे काम करने वाले सभी लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पडा है। कृषी क्षेत्र में काम करनेवाले किसान और मजदुर बेरोजगार होने लगे। खेती करना किसानो के लिए महंगा साबित हुआ और किसान भी खेती करना छोड कर अन्य व्यवसाय तलाशने लगे। कृषी के पतन के कारण ग्रामीण क्षेत्र में बेरोजगारी में वृध्दी हो गई।

<u>बेरोजगारी के प्रकार</u>

भारत मे बेरोजगारी के प्रकार को निम्न रुप से वर्णन किया जा सकता है।

1. संरचनात्मक बेरोजगारी :–

जब किसी देश में भौतिक वित्तीय और माननीय संरचना कमजोर होने के कारण रोजगारों का अभाव होता है, तब अस बेरोजगारी को संरचनात्मक बेरोजगारी कहते है।

2. अदृश्य बेरोजगारी :–

अदृश्य बेरोजगारी वह स्थिती होती है, जिसमें व्यक्ती प्रचलीत मजदूरी दर पर कार्य करने को तैयार है, लेकीन उसे कोई भी रोजगार ना मिल पाना।

3. मोसमी बेरोजगारी :–

मोसमी बेरोजगारी के अंतर्गत काम करने वालों को साल में कुछ ही महिने रोजगार मिलता है, बाकी महिनों मे उसको कोई रोजगार नही मिलता मोसमी बेरोजगारी कृषी, पर्यटन, हॉटेलींग आदी व्यवसायों मे होती है।

4. घर्षणात्मक बेरोजगारी :–

जब अर्थव्यवस्था मे निम्न परिवर्तन होते है तब घर्शणात्मक बेरोजगारी उत्पन्न होती है। जब व्यक्ती अपने रोजगार परिवर्तन हेतू अपना रोजगार छोडता है। जब किसी उद्योग के उत्पाद की मात्र कम हो जाती है ऐसी परिस्थिती में थोडे समय के लिए बेरोजगारी उत्पन्न होती है, जिसे घर्षणात्मक बेरोजगारी कहते है।

5. सामान्य बेरोजगारी :–

जब व्यक्ती प्रचलीत मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार है, लेकीन उसे कोई भी रोजगार नही मिलता। ऐसी परिस्थिती को सामान्य बेरोजगारी कहते है।

6. स्वैच्छीक बेरोजगारी :–

जब किसी व्यक्ती को प्रचलीत मजदूरी दर पर काम कमल रहा हो लेकीन वह अपनी इच्छा से काम नही करना चाहता उसे ऐच्छिक बेरोजगारी कहते है।

7. चक्रीय बेरोजगारी :–

व्यवसाय चक्र में गिरावट के कारण व्यक्ती अपनी नोकरी खो देते है उसे चक्रीय बेरोजगारी कहते है। अर्थव्यवस्था में चक्रीय चढ उतार के कारण चक्रीय बेरोजगारी पैदा होती है। जब अर्थव्यवस्था मे समृध्दी का दौर होता है तब उत्पादन बढता है, रोजगार के नये अवसर पैदा होते है और जब अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजरती है तो उत्पादन कम होता है और कम लोगों की जरुरत होती है, जिसके कारण बेरोजगारी बढती है।

<u>बरोजगारी दुर करने के उपाय</u>

भारत मे बेरोजगारी की समस्या दुर करने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे है। हमारी सरकारद्वारा अनेक उपाय योजनाऍ की जा रही है। उन प्रयासों की समिक्षा हम यहॉ करेंगे।

1. कृषी विकास :–

हमारे देश की अर्थव्यवस्था कृषी पर निर्भर है। कृषी क्षेत्र मे रोजगार की संधी बडी संख्या में उपलब्ध होती है। कृषी के पतन के कारण ही ग्रामीण क्षेत्र में बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हुई है। कृषी का संतुलीत विकास हुआ तो हमारे ग्रामीण क्षेत्र की बेरोजगारी की समस्या का समाधान किया जा सकता है। कृषी के मुलभूत ढॉचो मे परिवर्तन होना आवश्यक है। कृषी मान्सून पर निर्भर ना हो इसलिए कृषी में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करना चाहिए। कृषी का संतुलीत विकास के कारण ही हम ग्रामीण बेरोजगारी पर विजय प्राप्त कर सकते है।

2. जनसंख्या नियंत्रण :–

हमारे देश की अर्थव्यवस्था के विकास मे बढती जनसंख्या एक बडी बाधा है। जनसंख्या के बोझ के कारण हमारे देश में बेरोजगारी और गरीबी बढ रही है जिसका विपरीत परीणाम हमारे आर्थिक वृध्दी पर हुआ है। जनसंख्या नियंत्रण के कारण परिवार नियोजन का प्रसार करना आवश्यक है। इसलिए परिवार नियोजन के कार्यक्रम को ग्रामीण और पिछडे क्षेत्रों में सफल बनाने के लिए विशेष प्रचार की आवष्यकता है।

3. शिक्षा प्रणाली मे सुधार :–

बेरोजगारी की समस्या का हल करने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है। बदलते हुए वातावरण के अनुसार शिक्षा प्रणाली को सुधारों सहीत पुनः निर्मित करने की आवश्यकता है। तकनिकी और व्यवसाईक शिक्षा का ग्रामीण क्षेत्र मे प्रसार होना आवश्यक है। रोजगार के अवसर निर्माण करने की क्षमता शिक्षा प्रणाली में होना आवश्यक है।

4. छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन :–

आज हमारे देश में औद्योगिकीकरण के कारण बडे उद्योगों का निर्माण हुआ है। उसके साथ हमारे ग्रामीण क्षेत्र मे अनेक छोटे छोटे उद्योग आर्थिक विकास मे अपनी महत्वपुर्ण भूमिका निभा रहे थे उन उद्योगों का औद्यागिकीकरण के कारण पतन हो गया। इन छोटे उद्योगों मे बहुत बडी संख्या में रोजगार उपलब्ध होता था, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र रोजगार की संधी मिल रही थी। इन छोटे उद्योगों को प्राथमिकता देनी चाहीए। सुविधाऍ विशणन सुविधाऍ और ऋण उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

5. विकेंद्रीकरण :–

बेरोजगारी कम करने के लिए उद्योगों का विकेंद्रीकरण होना आवश्यक है। आज हमारे देश में कुछ बडे शहरों मे बडे उद्योगोंका केंद्रीकरण हुआ हे, इसलिए ग्रामीण क्षेत्र की जनता रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन कर रही है। इससे अत्याधिक भीड और शहरीकरण की समस्या उत्पन्न हुई है। इन परिस्थिती में छोटे छोटे षहरो के पास मे उद्योगों का विकास करना चाहीए। इससे ऐसे उद्योगोंका विकास होगा और साथ ही उस क्षेत्र में रहनेवाले लोगो को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

6. सरकारद्वारा उपाय :–

सरकारद्वारा किए जाने वाले उपायेंक का उद्देश बेरोजगारी दुर करना है। हमारी सरकार ने समय समय पर रोजगार की अनेक योजनाओं की शुरुवात की है, वह योजनाऍ निम्नलिखीत है।

- नॅशनल रुरल एम्पलायमेंट प्रोग्राम - NREP
- रुरल लॅडलेस लेबर एम्पलायमेंट गारंटी प्रोग्राम - RLEGP
- ट्रेनिंग ऑफ रुरल युथ फॉर सेल्फ एम्पलायमेंट - TRYSEM
- 20 Point Programme
- मिनिमम निडज प्रोग्राम - MNP
- स्मॉल फार्मरक डेव्हलपमेंट - MFALA
- डॉट प्रॉन एरीया प्रोग्राम - DPAP
- इंटीग्रेटेड रुरल डेव्हलपमेंट प्रोग्राम - IRDP
- जवाहर रोजगार योजना - JRY
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 - MNREGA

उपसंहार

गरीबी और बेरोजगारी कहीं ना कही एक दुसरे से जुडे हुए है। गरीबी और बेरोजगारी के कारण लोगों को जीवन में दुःख और असम्मान झेलना पडता है। अगर रोजगार नही होगा तो पैसे नही आएंगे। गॉव मे भी लोग गरीबी से परेशान है। गरीबी और बेरोजगारी से परेशान होकर कुछ लोग अपराधों के दलदल में फस जाते है। हमारी सरकार गरीबी और बेरोजगारी रोकने के लिए और नियंत्रित करने के लिए बडे कदम उठा रही है लेकीन यह पर्याप्त नही है।

संदर्भ :

सामाजिक समस्याऍ – राम अहुजा,रावत प्रकाशन, जयपुर

सामाजिक विघटन – जी.के.अग्रवाल,साहित्य भवन, आगरा

सामाजिक समस्याऍ – क्रॉनिकल – नई दिल्ली

भारतीय अर्थव्यवस्था – य.च.म.मुक्त विद्यापीठ, नाशिक